



# भारत का खजापत्र

## The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)  
PART II—Section 3—Sub-Section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 56]

नई दिल्ली, बहुस्पतिवार, जनवरी 25, 1996/माघ 5, 1917

No. 56]

NEW DELHI, THURSDAY, JANUARY 25, 1996/MAGHA 5, 1917

वित्त मंत्रालय  
(राजस्व विभाग)  
केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड  
अधिसूचना

नई दिल्ली, 25 जनवरी, 1996

आग्रह-कर

का. आ. ६०(अ).—केन्द्रीय सरकार, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 145 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त नीतियों का प्रयोग करते हुए उन रामों निर्धारितियों जो आणिंज्यक लेखा पद्धति के अनुगार खाता वहियां रखते हैं द्वारा अनुपालन किये जाने के लिये निम्नलिखित लेखा मानक अधिसूचित करती हैं, अश्वति:—

क. लेखा नीतियों के प्रकटन से संबंधित लेखा मानक:

- (1) वित्तीय विवरणों की तैयारी और उपस्थापन में अंगीकृत सभी महत्वपूर्ण लेखा नीतियों के प्रकट किया जायेगा।
- (2) महत्वपूर्ण लेखा नीतियों का प्रकटन, वित्तीय विवरणों का एक भाग होगी और महत्वपूर्ण लेखा नीतियों का प्रकटन सामान्यतः एक स्थान पर ही किया जायेगा।

(3) लेखा नीति में ऐसे किसी भी परिवर्तन को जिसका पूर्व वर्ष या पूर्व वर्षों के पश्चात् के वर्षों में तात्त्विक प्रभाव हो, को प्रकट किया जायेगा। ऐसे परिवर्तन का, समाधान और परिणामस्वरूप समायोजन को यदि तात्त्विक हो तो, उस अवधि के वित्तीय विवरणों में, ऐसे परिवर्तनों का प्रभाव प्रतिबिंబित करने के लिये दर्शाया जायेगा। जहाँ ऐसे परिवर्तन का प्रभाव पूर्णतया या भागतः अभिनिश्चित न किया जा सके, तो उस तथ्य को उपर्योगित किया जायेगा। यदि लेखा नीतियों में ऐसे परिवर्तन किये गये हैं जिनका पूर्व वर्ष के वित्तीय विवरणों पर कोई तात्त्विक प्रभाव नहीं है परन्तु पूर्व वर्ष के पश्चात् के किसी वर्ष पर युक्तियुक्त रूप ये उसका तात्त्विक प्रभाव प्रत्याशित है, तो ऐसे परिवर्तन के तथ्य का पूर्व वर्ष, जिसमें परिवर्तन को अंगीकृत किया गया है, में समुचित रूप से प्रकटन किया जायेगा।

(4) निर्धारिती द्वारा अंगीकृत लेखा नीतियाँ ऐसी होनी चाहिये कि उनके आधार पर तैयार और उपस्थापित किये गये वित्तीय विवरणों से व्यापार वृत्ति या व्यवसाय के वास्तविक तथ्य उचित स्थित विर्णन प्रस्तुत करें।

इस प्रयोजन के लिये लेखा नीतियों के चयन और उपयोजन से शासित करने वाली मुख्य शर्तें निम्नलिखित हैं, अर्थात् :—

- (i) प्रजा :—सभी ज्ञात देनदारियों और घटाओं के लिये प्रावधान किया जाना चाहिये जाहे इस राशि का निश्चित रूप से अवधारण नहीं किया जा सकता हो और उपलब्ध सूचना को ध्यान में रखते हुए, सर्वोत्तम अनुमान ही उपलब्ध हो।
- (ii) प्रण की अपेक्षा सार :—संव्यवहारों और घटनाओं का लेखा उपचार और वित्तीय विवरणों में उपस्थान सार द्वारा शासित होना चाहिये न कि बोकल विधिक प्रण द्वारा।
- (iii) नातिक :—वित्तीय विवरणों के सभी तात्त्विक मर्दों का प्रकटन होना चाहिये, जिसका ज्ञान वित्तीय विवरणों में उपयोग के विनिश्चय पर अमर डाल सकता है।
- (5) यदि वित्तीय विवरणों में चालू समुत्थान, स्थिरता और प्रोत्तश्वन की वाक्ता मूल लेखा धारणाओं का अनुमरण किया जाना है तो, ऐसी धारणाओं की वाक्ता विनिर्दिष्ट प्रकटीकरण अपेक्षित नहीं है। यदि मूल लेखा धारणा का अनुसरण नहीं किया जाना है तो यह तथ्य प्रकट किया जायेगा।
- (6) गैर (1) से पैरा (5) के प्रयोजनों के लिये प्रति,—
  - (क) “नीति नीति” में कोई विनिर्दिष्ट लंबा विवरण और वित्तीय विवरण की तैयारी और प्रस्तुतिकरण में निवाली हाँ अंगीकृत सिद्धांतों का लागू करने की आवश्यक अनिवार्य है।
  - (ख) “प्रोटोकॉल” एवं धारणा को लिखित करना है कि राजस्व और धारणा प्रोटोकॉल हुए हैं, अर्थात् जर्ये से आवश्यक या उपयोग (प्रक्रियाएँ या प्रदत्त धन के लिये यह) जोर उन अवधियों के वित्तीय विवरणों से ग्राहित हो, जिनमें संबंध है, प्रावृत्त होती है।
  - (ग) “स्विरता” इव धारणा को लिखित करना है कि लेखा नीतियां एक वर्कशॉप से इकठ्ठी तक स्थिर हैं।
  - (घ) “वित्तीय विवरण” एवं किसी नियांसितों की वित्तीय स्थिरता, निपादन और वित्तीय विवरण में परिवर्तन के बारे में (जानकारी देने वाले कोई विवरणी अनिवार्य है और इसमें उल्लंघन, लाभ और हानि लेखा और अन्य विवरण तथा इसमें भाग नहीं आटकारी टिप्पण सम्मिलित है।

(इ) “चालू समुस्थान” उस धारणा को निर्दिष्ट करता है कि निर्धारितों का कारबार उपजीविका या व्यवसाय के समाप्त या तात्त्विक रूप से कम करने का न नीति कोई आवश्यक है और न आवश्यकता तथा पूर्वानुमेय भविष्य में वहां कारबार, अपजीविका या व्यवसाय जारी रखने का आवश्यक रखता है।

आपूर्व अवधि की ओर असाधारण मर्दों के प्रकट तथा लेखा नीतियों के परिवर्तनों की वाक्ता लेखा मानक।

(7) पूर्व अवधि की मर्दों पृथक रूप से उनका प्रकृति और रकम के गाँधि पिछले दर्शक के लाभ और हानि लेखा में इस नीति ने प्रकट की जायेगा, किंतु दर्शक के लाभ और हानि पर उनका समाधान समझा जा सके।

(8) पिछले दर्शक के दोगने उद्यग ही अनावश्यक मर्दों के लाभ और दूसरी लेखा में गाँधि के भत्ते की रूप से प्रकट किया जायेगा। ऐसे प्रकट के भत्ते की प्रकृति और रकम को पृथक लाभ (उन गैरित में प्रकट किया जायेगा कि पिछले दर्शक के प्रथम एवं द्वितीय मर्दों के संबंध में उनका महत्व और उन पर उपलब्ध जानकारी समझा जा सके।

(9) किसी लेखा नीति में परिवर्तन केरा तभी किया जायेगा जब कानून द्वारा विन्म लेखा नीति का अधीकरण अपेक्षित हो या वह समझा जाता है कि परिवर्तन के परिणामस्थल निर्धारित वित्तीय विवरणों को अधिक अनुकूल रूप से निर्दिष्ट रख सकेगा।

(10) लेखा नीति में कोई ऐसा परिवर्तन जिसका लाभ का प्रश्नादार है, उसका विवरण ऐसे परिवर्तन का अधार द्वारा उपलब्ध किया जायेगा विन्म लेखा नीति के लाभ तक नहीं होता कि परिवर्तन को प्रतिबिधित करने के लिये उत्तर दर्शक ने विन्म विवरणों में उपशित किये जायें गिर्वर्षे ऐसे परिवर्तन किया जाया है। उनमें परिवर्तन का लाभ अन्य अनिवार्य निर्धारित न दिया जा सके तो वह उन उपर्योगों का लाभ नहीं है। यदि लेखा नीतियों में ऐसा अन्य विवरण किया जाता है जिसका पिछले दर्शक के वित्तीय विवरणों पर कोई लाभान्वय प्रभाव नहीं है परन्तु पिछले वर्षों से पश्चात् वर्षों में उपर्योग वार्षिक प्रभाव पड़ना प्रत्याशित है, ऐसे परिवर्तन के लिये को समुचित रूप से उन पिछले दर्शक के वर्ष की वर्ष की युक्तिगृहीत संभावना है, को भी प्रकट किया जायेगा।

(ii) सेवन प्रावक्षलन में कोई नेता परिवर्तन जिसका पूर्ववर्ती वर्ष में तात्त्विक प्रभाव हो, प्रकट किया जायेगा और उसका वर्णन निर्धारित किया जायेगा। लेखा ग्रावक्षलन में ऐसा कोई परिवर्तन जिनका पूर्ववर्ती वर्ष के पश्चात् के वर्षों में तात्त्विक प्रभाव पड़ने की युक्तिगृहीत संभावना है, को भी प्रकट किया जायेगा।

(12) यदि यह प्रश्न उद्भूत होता है कि ऐसा परिवर्तन लेखा नीति में परिवर्तन है या लेखा प्राक्कलन में, तो वह प्रश्न विनिश्चय के लिये बोर्ड को निर्दिष्ट किया जायेगा।

(13) पैरा (7) से (12) के प्रयोजनों के लिये अभियक्त—

(क) "लेखा प्राक्कलन" से वित्तीय विवरण तैयार करने के प्रयोजन के लिये बनाया गया प्राक्कलन अभिप्रेत है जो वित्तीय विवरणी तैयार किये जाने के समय विद्यमान परिस्थितियों पर आधारित है।

(ख) "लेखा नीति" से ऐसी विनिर्दिष्ट लेखा नीति और पढ़ति अभिप्रेत है जिसे निर्धारिती द्वारा वित्तीय विवरणों को तैयार करने और उपस्थापित करने में अपनाया गया है।

(ग) "असाधारण मदों" से ऐसे लाभ या हानि अभिप्रेत है जो ऐसी घटनाओं या समव्यवहारों में उद्भूत हुए हैं जो कारबार के सामान्य क्रियाकलाप से भिन्न हैं और जो दोनों तात्त्विक हैं तथा जिसकी बार-बार या नियमित रूप में पुनरावृत्ति की संभावना नहीं है। असाधारण मदों में परिस्थितियों में आवश्यक ऐसा तात्त्विक समायोजन भी है जो यद्यपि पूर्ववर्ती वर्षों के पूर्व वर्षों से संबंधित है परन्तु पूर्व वर्ष में अवधारित किया गया है।

परन्तु यह कि किसी निर्धारिती के कारबार या वृत्ति वा व्यवसाय के सामान्य क्रियाकलाप से उद्भूत होने वाली आय या व्यय की रकम यद्यपि असाधारण या बार-बार धटित होने वाली नहीं है तथापि वह असाधारण मद के रूप में अर्हत नहीं होगी।

(घ) "वित्तीय विवरण" में ऐसे कोई विवरणी अभिप्रेत है जिससे निर्धारिती की वित्तीय स्थिति उसके निष्पादन और वित्तीय स्थिति में परिवर्तन, की सूचना मिलती हो और उसमें तुन-पन्न लाभ और हानि लेखा अस्य विवरण तथा उसका भाग स्वरूप स्पष्टीकारक टिप्पण भी मन्मिलित है।

(इ) "पूर्व अवधि मदों" में ऐसा तात्त्विक प्रभार या उधार अभिप्रेत है जो पिछले वर्ष, एक या अधिक पूर्व वर्षों का वित्तीय विवरण तैयार करने में हुई गणनिया/लोप के परिणामस्वरूप उद्भूत हुई है।

परन्तु यह कि किसी आकस्मिकता के परिणामस्वरूप उद्भूत प्रभार या उधार जिसका प्राक्कलन धारित होने के समय सही नहीं हो सका, गलती में संशोधन नहीं होगा बल्कि प्राक्कलन में परिवर्तन माना जायेगा और ऐसे मदों को पूर्व अवधि मद के रूप में नहीं समझा जायेगा।

यह अधिसूचना, 1 अप्रैल, 1996 से प्रवृत्त होगी और तदनुसार निर्धारण वर्ष 1997-98 और पश्चात्कर्त्ता निर्धारण वर्षों की सामूहिक होगी।

[सं. 9949/फा. सं. 132/7/95-टी. पी. एल]

के.डी. गुप्ता, संयुक्त सचिव

### MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

(Central Board of Direct Taxes)

### NOTIFICATION

New Delhi, the 25th January, 1996

### INCOME-TAX

S.O. 69(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (2) of section 145 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), the Central Government hereby notifies the following accounting standards to be followed by all assessees following mercantile system of accounting, namely:—

A. Accounting Standard I relating to disclosure of accounting policies :

(1) All significant accounting policies adopted in the preparation and presentation of financial statements shall be disclosed.

(2) The disclosure of the significant accounting policies shall form part of the financial statements and the significant accounting policies shall normally be disclosed in one place.

(3) Any change in an accounting policy which has a material effect in the previous year or in the years subsequent to the previous years shall be disclosed. The impact of, and the adjustments resulting from, such change, if material, shall be shown in the financial statements of the period in which such change is made to reflect the effect of such change. Where the effect of such change is not ascertainable, wholly or in part, the fact shall be indicated. If a change is made in the accounting policies which has no material effect on the financial statements for the previous year but which is reasonably expected to have a material effect in any year subsequent to previous year, the fact of such change shall be appropriately disclosed in the previous year in which the change is adopted.

(4) Accounting Policies adopted by an assessee should be such so as to represent a true and fair view of the state of affairs of the business, profession or vocation in the financial statements prepared and presented on the basis of such accounting policies. For this purpose, the major considerations governing the selection and application of accounting policies are following, namely :—

(i) Prudence :—Provisions should be made for all known liabilities and losses even though the amount cannot be determined with certainty and represents only a best estimate in the light of available information;

(ii) Substance over form :—The accounting treatment and presentation in financial statements of transactions and events should be governed by their substance and not merely by the legal form;

(iii) Materiality :—Financial statements should disclose all material items, the knowledge of which might influence the decisions of the user of the financial statements.

(5) If the fundamental accounting assumptions relating to Going Concern, Consistency and Accrual are followed in financial statements, specific disclosure in respect of such assumptions is not required. If a fundamental accounting assumption is not followed, such fact shall be disclosed.

(6) For the purposes of the paragraphs (1) to (5), the expressions,—

- (a) "Accounting policies" means the specific accounting principles and the methods of applying those principles adopted by the assessee in the preparation and presentation of financial statements;
- (b) "Accrual" refers to the assumption that revenues and costs are accrued, that is, recognised as they are earned or incurred (and not as money is received or paid) and recorded in the financial statements of the periods to which they relate;
- (c) "Consistency" refers to the assumption that accounting policies are consistent from one period to another;
- (d) "Financial Statements" means any statement to provide information about the financial position, performance and changes in the financial position of an assessee and includes balance sheet, profit and loss account and other statements and explanatory notes forming part thereof;
- (e) "Going concern" refers to the assumption that the assessee has neither the intention nor the necessity of liquidation or of curtailing materially the scale of the business, profession or vocation and intends to continue his business, profession or vocation for the foreseeable future.

B. Accounting Standard II relating to disclosure of Prior period and Extraordinary items and changes in accounting policies :

(7) Prior period items shall be separately disclosed in the profit and loss account in the previous year together with their nature and amount in a manner so that their impact on profit or loss in the previous year can be perceived.

(8) Extraordinary items, of the enterprise during the previous year shall be disclosed in the profit and loss account as part of income. The nature and amount of each such item shall be separately disclosed in a manner so that their relative significance and effect on the operating results of the previous year can be perceived.

(9) A change in an accounting policy shall be made only if the adoption of a different accounting policy is required by statute or if it is considered that the change would result in a more appropriate preparation or presentation of the financial statements by an assessee.

(10) Any change in an accounting policy which has a material effect shall be disclosed. The impact of and the adjustments resulting from such change, if material, shall be shown in the financial statements of the period in which such change is made to reflect the effect of such change. Where the effect of such change is not ascertainable, wholly or in part, the fact shall be indicated. If a change is made in the accounting policies which has no material effect on the financial statements for the previous year but which is reasonably expected to have a material effect in years subsequent to the previous years, the fact of such change shall be appropriately disclosed in the previous year in which the change is adopted.

(11) A change in an accounting estimate that has a material effect in previous year shall be disclosed and quantified. Any change in an accounting estimate which is reasonably expected to have a material effect in years subsequent to previous year shall also be disclosed.

(12) If a question arises as to whether a change in accounting policy or a change in an accounting estimate, such a question shall be referred to the Board for decision.

(13) For the purposes of the paragraphs (7) to (12), the expressions,—

- (a) "Accounting estimate" means an estimate made for the purpose of preparation of financial statements which is based on the circumstances existing at the time when the financial statements are prepared.
- (b) "Accounting policies" means the specific accounting principles and the method of applying those principles adopted by the assessee in the preparation and presentation of financial statements.
- (c) "Extraordinary items" means gains or losses which arise from events or transactions which are distinct from the ordinary activities of the business and which are both material and expected not to recur frequently or regularly Extraordinary items includes material adjustments necessitated by circumstances which though related to years preceding to the previous years are determined in the previous year.

Provided that income or expenses arising from the ordinary activities of the business or profession or vocation of an assessee though abnormal in amount or infrequent in occurrence shall not qualify as extraordinary item.

- (d) "Financial Statements" means any statement to provide information about the financial position, performance and changes in the financial position of an assessee and includes balance sheet, profit and loss account and other statements and explanatory notes forming part thereof.
- (e) "Prior period items" means material charges of credits which arise in the previous year as a result of errors or omissions in the preparation of the financial statements of one or more previous years;

Provided that the charge or credit arising on the outcome of a contingency, which at the time of occurrence could not be estimated accurately shall not constitute the correction of an error but a change in estimate and such an item shall not be treated as a prior period item.

This notification shall come into force with effect from 1st day of April, 1996 and shall accordingly apply to assessment year 1997-98 and subsequent assessment years.

[No. 9949/F. No. 132/95-TPL]

K. D. GUPTA, Jt. Secy.